Serving Education for Last 40 Years

NEERAJ®

M.P.S.E.-6

शांति और द्वंद्व अध्ययन

(Peace and Conflict Studies)

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Ved Prakash Sharma,* M.A. (Political Science)

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

शांति और द्वंद्व अध्ययन

(Peace and Conflict Studies)

Question Paper—June-2024 (Solved) 1
Question Paper—December-2023 (Solved) 1
Question Paper—June-2023 (Solved) 1
Question Paper—December-2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-2

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. शांति और संघर्ष अध्ययन : प्रकृति और अध्ययन क्षेत्र 1
(Peace and Conflict Study: Nature and Scope of Study)

2. शांति और संघर्ष का अवधारणात्मक विश्लेषण 10
(Conceptual Analysis of Peace and Conflict)

3. संघर्ष की प्रकृति और उसके रूप : अंतरा-राज्य, अंतर्राज्य तथा वैश्विक 15
(Nature and Forms of Conflict: Intra-state, Inter-state and Global)

4. युद्ध के सिद्धान्त (Principles of War) 23

5. युद्ध के प्रकार : परंपरागत युद्ध, सीमित युद्ध एवं परमाणु युद्ध 29
(Types of War: Traditional War, Limited War and Nuclear War)

6. युद्ध के प्रकार एवं उपाय : क्रान्तिकारी युद्ध, गृह युद्ध, छापामार युद्ध, विद्रोह एवं प्रत्याद्रोह, असमान युद्ध एवं आतंकवाद, परोक्ष युद्ध 37
(Types and Remedies of War: Revolutionary Wars, Civil War, Guerilla War, Insurgency and Counter-Insurgency, Asymmetric War and Terrorism, Indirect War)

7. संयुक्त राष्ट्र प्रणाली : विवादों का शांतिपूर्ण समाधान 43
(United Nations System: Peaceful Solution of Controvercies)

8. संयुक्त राष्ट्र : शांति-निर्वहन, शांति-रचना और अधिनिर्णयन 59
(United Nations : Peace-keeping, Peace-structure and Adjudication)

9. निरस्त्रीकरण एवं अस्त्र-नियंत्रण (Disarmament and Arms Control) 75

10. विश्वास निर्माण उपाय (Confidence Building Remedies) 82

11. अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष : प्रबंधन तथा समाधान 90
(International Conflicts : Administration and Solutions)

12. कार्यात्मक उपागम और क्षेत्रीयतावाद 95
(Functional Approaches and Regionalism)

13. गांधीवादी उपागम (Gandhian Approach) 101

14. मानव सुरक्षा (Human Security) 109

15. शान्ति आन्दोलन और शान्ति अनुसंधान 118
(Peace Agitation and Peace Research)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

शांति और द्वंद्व अध्ययन

(Peace and Conflict Studies)

M.P.S.E.-6

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रत्येक भाग में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. भारत और पाकिस्तान के बीच विश्वास बहाली उपायों (सी.बी.एम.) पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-88, प्रश्न 3

प्रश्न 2. द्वंद्व समाधान के विभिन्न तरीकों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-11, पृष्ठ-91, 'संघर्ष समाधान के उपाय'

प्रश्न 3. द्वंद्व निवारण और समाधान में क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-97, 'संघर्ष निवारण (अवरोधन) और समाधान में क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका'

प्रश्न 4. सत्याग्रह का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-101, 'सत्याग्रह', पृष्ठ-107, प्रश्न 2

प्रश्न 5. मानव सुरक्षा की चुनौतियों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-109, 'मानव सुरक्षा संबंधी चिंताओं को परिभाषित करना', पृष्ठ-112, 'व्यावहारिक रूप से मानव सुरक्षा के समक्ष चुनौतियाँ'

भाग-II

प्रश्न 6. शांति अध्ययन क्या है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-6, प्रश्न 4

प्रश्न 7. नकारात्मक और सकारात्मक शांति का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'नकारात्मक और सकारात्मक शांति', पृष्ठ-6, प्रश्न 2 तथा अध्याय-2, पृष्ठ-13, 'शांति की नकारात्मक और सकारात्मक अवधारणा' तथा पृष्ठ-14, प्रश्न 5

प्रश्न 8. राज्य की शांति के उपकरण के रूप में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-12, 'शांति के साधन के रूप में राज्य'

प्रश्न 9. अंतर्समाजीय द्वंद्व के कारणों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-15, 'अंतरा-सामाजिक संघर्ष के कारण'

प्रश्न 10. युद्ध की बदलती प्रकृति का पता लगाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-23, 'परिचय', 'युद्ध क्या है?' तथा पृष्ठ-26, 'युद्ध की बदलती प्रकृति'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

शांति और द्वंद्व अध्ययन

(Peace and Conflict Studies)

M.P.S.E.-6

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रत्येक भाग में से कम-से-कम दो प्रश्न चुनते हुए, कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. नकारात्मक और सकारात्मक शांति पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'नकारात्मक और सकारात्मक शांति', पृष्ठ-6, प्रश्न 2, अध्याय-2, पृष्ठ-13, 'शांति की नकारात्मक और सकारात्मक अवधारणा' तथा पृष्ठ-14, प्रश्न 5

प्रश्न 2. 'मानव प्रकृति अनिवार्य रूप से शान्तिपूर्ण है।' चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-10, 'मानव स्वभाव'

प्रश्न 3. अन्तर-सामाजिक संघर्षों के कारणों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-15, 'अंतरा सामाजिक संघर्ष के कारण'

प्रश्न 4. युद्ध के व्यवस्था स्तरीय विश्लेषण का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-4, पृष्ठ-24, 'प्रणाली-स्तरीय विश्लेषण'

प्रश्न 5. क्षेत्रीय संघर्ष क्या है? समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, 'परमाणु युग में पारंपरिक युद्ध' पृष्ठ-30, 'क्षेत्रीय संघर्ष'

भाग-II

प्रश्न 6. क्रांतिकारी युद्ध क्या है? विस्तार से बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-37, 'क्रांतिकारी युद्ध'

प्रश्न 7. संघर्ष समाधान के तरीके के रूप में समझौता की जाँच कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-7, पृष्ठ-43, 'समझौता वार्ता, पृष्ठ-44, सुलह करवाना'

प्रश्न 8. संयुक्त राष्ट्र शान्ति की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-59, 'शांति निर्वहन', शांति रचना और शांति निर्माण : विशेषताएँ'

प्रश्न 9. शस्त्र नियंत्रण पर एक टिप्पणी लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-75, 'निरस्त्रीकरण', पृष्ठ-76, 'अस्त्र नियंत्रण', 'निरस्त्रीकरण एवं अस्त्र नियंत्रण का संक्षिप्त इतिहास'

प्रश्न 10. भारत-पाकिस्तान संबंधों के विशेष संदर्भ में विश्वास बहाली के विभिन्न उपायों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-10, पृष्ठ-84, 'भारत-पाकिस्तान विश्वास-निर्माण उपाय'

■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

शांति और संघर्ष अध्ययन
(PEACE AND CONFLICT STUDY)

शांति और संघर्ष अध्ययन : प्रकृति और अध्ययन क्षेत्र
(Peace and Conflict Study: Nature and Scope of Study)

1

परिचय

सामान्यतः शांति का तात्पर्य प्रत्यक्ष हिंसा की अनुपस्थिति माना जाता है। 'एक्सप्लेनेटरी फोनोग्राफिक प्रोनाउंसिंग डिक्शनरी ऑफ दी इंग्लिश लैंग्वेज' (1850) में शांति को कई पर्यायों द्वारा अभिहित किया गया है–'युद्ध से राहत', 'मुकदमों और अव्यवस्था से राहत', 'उत्तेजना से राहत', 'भय से मुक्ति', 'शांति एवं विचारों का दमन' आदि सम्मिलित हैं। इनमें से ज्यादातर परिभाषाएं बहिष्कार से संबद्ध हैं और यहां शांति की परिभाषा 'अशांति' के रूप में की गई है। 'वर्ल्ड एनसाइक्लोपीडिया ऑफ पीस' (1986) के प्रधान सम्पादक लिनस पॉलिंग के अनुसार, "जैसे-जैसे इतिहास आगे बढ़ता है, प्रणाली में बसे हुए लोगों द्वारा आनन्द की चरमसीमा और पीड़ा की दरारों का अनुभव किया जाता है। आमतौर पर शांति अध्ययनों का संबंध शांति प्राप्त करने की बजाय युद्ध के परिहार से अधिक है, इसलिए शांति की पहचान प्रमुखतः भयंकर संघर्ष की अनुपस्थिति के रूप में की जाती है।

इस अध्याय के अंतर्गत शांति परम्पराएं, शांति और हिंसा, हिंसा के रूप, संघर्ष मूल्यांकन और संघर्ष प्रबंधन तथा शांति के अध्ययन के लिए प्रमुख उपागम आदि की चर्चा की गई है।

अध्याय का विहंगावलोकन

शांति परम्पराएँ

शांति की समस्त संकल्पनाएं अनेक धार्मिक एवं दार्शनिक परंपराओं में निहित हैं। शांतिपूर्ण समाज वह है, जहां लोग प्रेमपूर्वक एवं मित्रतापूर्ण साथ-साथ रहते एवं काम करते हैं तथा एक समूह द्वारा दूसरे समूह पर प्रभुत्व स्थापना का प्रयास शांति में प्रमुख बाधा है। बौद्ध परम्पराएं न्याय, अहिंसा, समानता, जीवों के कल्याण के लिए जीवित प्राणियों में करुणा पर जोर देती है। अमेरिका के मूल निवासियों तथा अफ्रीकी जनजातीय संस्कृतियों में प्रकृति का शोषण न करने की प्रथा विद्यमान है। पृथ्वी पर शांति स्थापना हेतु प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की बजाय प्रकृति के साथ मित्रतापूर्वक रहने की जरूरत है। अनेक पाश्चात्य धार्मिक परंपराओं ने स्वाभाविक सद्भावना, निःस्वार्थ प्रेम, संपूर्णता और निजी कल्याण करने और द्वेष समाप्त करने के भी संदेश दिए हैं। यूनानी दार्शनिकों ने नागरिकों के विद्रोह के आधार पर शांतिपूर्ण संसार की अवधारणा का प्रतिपादन किया था। ये दार्शनिक परंपराएं हर व्यक्ति को मानवता की नैतिक योग्यता और विश्व नागरिकता के सिद्धांत पर आधारित एकता से भी जोड़ती थीं। मध्यकाल में शांति का तात्पर्य समाज की उन इकाइयों के साथ स्थायी संबंध से था, जो संगठित हिंसा को रोकता है। ज्ञानोदय विवचेन (Enlightenment thinking) में हिंसा और संघर्ष को एक बुराई के रूप में देखा गया है। 17वीं और 18वीं शताब्दी के राजनीतिक दार्शनिक जान लॉक और रूसो ने युद्ध को अनावश्यक माना। उनका विश्वास था कि सामाजिक अनुबंध हिंसा को रोक सकता था। 19वीं शताब्दी के रूसी विचारक टॉल्सटाय और अन्य शांतिवादी अराजकतावादी शांति को सम्मानपूर्ण मानव मूल्यों के रूप में समझते थे साथ ही दमन और हिंसा दोनों के लिए राज्य शक्ति के तंत्र को जिम्मेदार समझते थे। उनका उद्देश्य मानवीय अवस्थाओं को सुधारने में सशक्त बदलाव लाना था। इस उद्देश्य से 19वीं और 20वीं शताब्दियों के प्रारंभ में समाजवादी आंदोलनों ने मांग की कि वर्गहीन समाज में शांति प्राप्त की जा सकती है।

शांति और हिंसा

हालांकि शांति अध्ययन शांति को हिंसा की अनुपस्थिति के रूप में प्रस्तुत करते हैं, लेकिन इस संदर्भ में असहमति है कि 'शांति' और 'हिंसा' की उत्पत्ति किस कारण से होती है। प्रमुख

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

बहस यह रही है कि क्या शांति को केवल युद्ध की अनुपस्थिति के रूप में परिभाषित किया जाए अथवा फिर वह अवधारणा जो युद्ध की अनुपस्थिति तथा सामाजिक और आर्थिक न्याय की उपस्थिति दोनों को समाहित करती है। जो यह मानते हैं कि शांति संकुचित रूप में परिभाषित होनी चाहिए, वे यह भी मानते हैं कि अवधारणा की व्यापकता उसकी स्पष्टता को कम करती है। ज्यादा व्यापक संकल्पना का समर्थन करने वाले मानते हैं कि हिंसात्मक अर्थात जीवन को संकट में डालने वाली क्रियाएं और अल्पविकास उपागम के अनेक रूपों में हैं या फिर जो प्रत्यक्ष युद्ध की सीमा से बाहर हैं।

हिंसा के रूप

हिंसा की संकल्पना की तुलना में शांति की संकल्पना ज्यादा स्पष्ट रूप से जानी गई है। अत: अनेक सामाजिक संबंधों में निहित हिंसा के अनेक रूपों की जानकारी शांति की संकल्पना जानने के लिए जरूरी है।

प्रत्यक्ष और संरचनात्मक हिंसा

प्रत्यक्ष हिंसा से अभिप्राय हिंसा के प्रचलित अर्थ से है और जिसका संबंध शारीरिक चोट तथा कष्ट देना, जैसे–हत्या करने, पीटने और भला-बुरा कहने से है, चाहे वे युद्ध में हों अथवा अंतर्वैयक्तिक परिस्थितियों में हों। डकैती, बदला लेने अथवा मान-सम्मान की हानि के लिए साधन के रूप में प्रत्यक्ष हिंसा प्रयोग हो सकती है एवं राज्य राजनीतिक उद्देश्यों के लिए संगठित हिंसा का प्रयोग करते हैं। नरसंहार प्रत्यक्ष हिंसा का वह रूप है जो एक समूह द्वारा दूसरे के प्रति किया जाता है, लेकिन कमजोर पक्ष द्वारा बहुत कम प्रतिहिंसा की जाती है।

संरचनात्मक हिंसा में मानवीय समस्याओं के कारण उत्पन्न असमानतावादी और भेदभावपूर्ण व्यवहार होता है। संरचनात्मक हिंसा शोषणकारी उपायों के कारण जारी रहती है और सामाजिक प्रणालियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। संरचनात्मक हिंसा की संकल्पना राजनीतिक शोषण और आर्थिक निराशा में अंतर्निहित संघर्ष के गहरे कारण समझने में हमारी मदद करती है। संरचनात्मक हिंसा समाज में ज्यादा सरलता से देखी जा सकती है। वह भय और शोषण से नियंत्रित की जाती है। संरचनात्मक हिंसा की कुछ श्रेणियों, जैसे सत्तावाद अथवा लिंग और प्रजाति पर आधारित भेदभाव की प्रमुख रूप से सांस्कृतिक प्रावधानों द्वारा अनदेखी की जाती है।

नकारात्मक और सकारात्मक शांति

नकारात्मक शांति प्रत्यक्ष हिंसा पर जोर देती है, जो भौतिक बल से तोड़-मरोड़ करने की बजाय संधि वार्ताओं से प्राप्त की जा सकती है। नकारात्मक शांति उपागम में युद्ध रोकने के लिए ऐसे अंतर्राष्ट्रीय समझौते और संस्थाएँ महत्त्वपूर्ण हैं, जो राष्ट्रों के मध्य स्थायी संबंधों की मदद कर सके। नकारात्मक शांति नीतियां वर्तमान, अल्पकालिक अथवा निकट भविष्य पर जोर दे सकती हैं।

सकारात्मक शांति की संकल्पना का तात्पर्य सामाजिक शांति की संकल्पना के आधार पर केवल प्रत्यक्ष हिंसा की अनुपस्थिति ही नहीं, बल्कि संरचनात्मक हिंसा भी समाप्त करना है। जोहान गेल्तुंग के अनुसार असमानतावादी सामाजिक संरचनाओं के उन्मूलन से संबद्ध उपयुक्त और समान अवस्थाओं के विकास के बिना सकारात्मक शांति नहीं मिल सकती। सकारात्मक शांति का अध्ययन उन अवस्थाओं की पहचान करना है, जो मनुष्य की उत्तरजीविता के लिए जोखिम पैदा कर सकती हैं। इनमें पर्यावरण संबंधी पहलू और गरीबी और आर्थिक असमानता भी सम्मिलित है।

संघर्ष विश्लेषण और संघर्ष प्रबंधन

संघर्ष एक-दूसरे के विरोधी प्रयोजनों के अनुसरण से पैदा होता है और जो विरोधी शक्तियों के मध्य, विशेष रूप से सहयोगशील समस्या समाधान प्रक्रिया की कमी के अंतर्गत हो सकता है। संघर्ष की अवस्थाओं में संसाधनों को इस प्रकार गतिशील किया जाता है जिससे दूसरा पक्ष अपने व्यवहार में पहले पक्ष की इच्छानुसार बदलाव करने के लिए मजबूर हो। शांति के समीक्षकों का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि उन तरीकों में संघर्ष का नियंत्रण और समाधान कैसे किया जाए, जिनमें अन्य मूल्यों, जैसे–न्याय और आजादी को कम किए बिना हिंसा की संभावना अथवा स्तर कम किया जा सके।

संरचनात्मक परिस्थितियाँ

दीर्घकाल से चल रहे आंतरिक और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों की जड़ें संरचनात्मक अन्याय में निहित हैं। भयंकर संघर्ष असमान सामाजिक और आर्थिक प्रणाली के गर्भ में होता है, जो दीर्घकाल से शक्तिपूर्वक किए गए दमन को प्रतिबिम्बित करता है। कमजोर वर्ग की सांस्कृतिक पहचानों, राजनीतिक स्वायत्तता और आर्थिक स्थिति नष्ट होती है, जिसका प्रत्यक्ष संबंध महत्त्वपूर्ण शक्ति द्वारा उत्पन्न अवस्थाओं से होता है। हालांकि कुछ समस्याओं से निपटने हेतु सुधारों का सुझाव दिया जा सकता है। भौतिक हिंसा का प्रयोग करके संघर्ष कम किया जा सकता है, इसके बावजूद एक पक्ष की इच्छा दूसरे पर हावी हो सकती है। राज्य द्वारा अव्यवस्था का सार्वजनिक भय दिखाकर उत्पीड़क साधनों के अनुरक्षण को वैध ठहराया जा सकता है।

पारम्परिक प्रबंधन रणनीतियाँ

न्यायिक प्रणाली तथा व्यापक सार्वजनिक प्रशासन प्रणाली का संबंध संघर्ष के परंपरागत प्रबंधन में यथापूर्व स्थिति के संरक्षण और निहित संस्थाओं के अनुरक्षण से प्रभावित है। क्योंकि सत्ताधारी अपने

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्राधिकार के लिए चुनौतियों की व्याख्या आदेश लागू करने की सुविधा के अनुसार करते हैं। संघर्ष प्रबंधन को इस प्रकार देखा जाता है, जिससे प्रणाली के मूलभूत मूल्यों की चुनौतियां कम-से-कम हों। पारंपरिक प्रणाली में संघर्ष प्रबंधन उत्पीड़क नीति सशक्त करने में तब सहायक होता है, जब उसे महत्त्वपूर्ण प्रावधानों के अनुसार बनाया जाता है। राजनीतिक दृष्टि से शोषणकारी समाजों में स्वायत्तता की मांगों का जवाब नए संबंधों की बातचीत के बदले उत्पीड़क प्रतिक्रिया से दिया जाता है।

विवाद निपटारा और संघर्ष समाधान

विवाद निपटारा दृष्टिकोण संघर्षों का समाधान करने के लिए कानूनी क्रियाविधि और परंपरागत समझौतों पर आधारित होता है। मूल्य और पहचान संघर्ष के समाधान के लिए विवाद समाधान क्रियाविधि महत्त्वपूर्ण तरीके से प्रयोग नहीं की जा सकती। इसमें कर्त्ताओं और उनके संबंधों पर प्रभाव डाले बिना असंगति का निपटारा करना पूर्णत: संभव है। समझौता प्रक्रिया का परीक्षण किए बिना किया जा सकता है।

संघर्ष रूपांतरण और शांति निर्माण

संघर्षों के संरचनात्मक रूपांतरण के लिए ऐसी संरचनाओं की पहचान करना और समर्थन करना जरूरी है, जो शांति को सुदृढ़ करना चाहती हैं। परस्पर सहयोग की भावना से सकारात्मक अवसर बढ़ाए जा सकते हैं। रूपांतरकारी संरचना में पहचान और शक्ति संबंधों पर संघर्ष निपटारे की निहित प्रक्रिया में पुन: वार्ता जारी रखी जा सकती है। संघर्ष की गतिशीलता निहित हितों को बचाने के प्रयास से निपटारे की ओर बढ़ाई जा सकती है। रूपांतरकारी दृष्टिकोण में भूमिकाओं और संबंधन को कार्यों और अंत: क्रियाओं के नमूनों को अनुकूल बनाने की प्रक्रिया में परिवर्तन लाना जरूरी है। न्याय के लिए शांति निर्माण के उपाय के रूप में सामाजिक बदलाव सबसे ज्यादा उपयुक्त है, जिससे प्रतिष्ठित मानव जीवन स्थापित किया जा सकता है।

शांति के अध्ययन के लिए कुछ उपागम

शांति प्रयासों ने शुरुआत में अस्त्रों की होड़, निरस्त्रीकरण और विनाशकारी संघर्ष तथा युद्ध पर जोर दिया। वर्तमान में शांति अध्ययनों में व्यापक श्रेणी के उपागम और प्रयोग शामिल हैं।

नारीवादी उपागम

ऐतिहासिक दृष्टि से नारी की छवि शांतिवाद से जुड़ी रही है। प्यार, करुणा प्रशिक्षण आदि नारी सुलभ गुणों ने शांति की संकल्पनाओं को सशक्त किया है।

महिलाओं के विरुद्ध हिंसा–हालांकि महिला और पुरुष दोनों जेंडर, प्रजातिवाद, मानवाधिकार दुरुपयोग और गरीबी के शिकार हैं, फिर भी कुछ विशेष प्रकार के दुर्व्यवहार हैं, जिन्होंने पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को ज्यादा प्रभावित किया है। महिलाओं के विरुद्ध प्रत्यक्ष दुर्व्यवहार में बलात्कार और संगठित तरीके से महिलाओं पर आक्रमण भी सम्मिलित है। प्राचीन काल से अनेक गरीब देशों में महिलाएं संरचनात्मक हिंसा से ज्यादा पीड़ित रही हैं। गरीबों में सबसे ज्यादा गरीब वे युवा विधवाएं और वृद्ध महिलाएं हैं, जिनमें घर का खर्च चलाने की क्षमता कम होती है। यहां तक कि समय-समय पर बहुराष्ट्रीय निगमों के लिए कार्यरत महिलाओं को बहुत कम मजदूरी दी जाती थी। बाजारोन्मुखी आर्थिक प्रणाली के प्रवेश ने उनके आर्थिक कार्यों का कम मूल्य देकर महिलाओं को समुचित आय से वंचित किया है।

लिंग पहचान और मूल्य–पुरुष और स्त्री श्रेणियों की रचना को लिंग पहचानों से पैदा होने वाले शक्ति संबंधों से जाना गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से भेदभाव, शारीरिक भिन्नता और स्वभाव के साथ-साथ स्त्री की पहचान से जुड़ा है। बौद्धिक दृष्टि से भी नारी को कमजोर समझा जाता है। पुरुषों से अपना पुरुषत्व साबित करने के लिए राज्य की ओर से मरने और मारने की अपेक्षा की जाती है, जबकि स्त्रियों को प्रमुख रूप से पुरुषों से गठित सैन्य मांग पूर्ण करने के लिए आज्ञाकारी बनाया गया है। राज्य निर्माण पुरुषोचित कार्य है, जो हिंसक कार्रवाई के लिए प्रोत्साहित करता है। पुरुषों को आक्रामक जैव वर्ग के रूप में जाना जाता है, उन्हें युद्ध करने के लिए आदेश दिया जाता है और लड़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। अस्त्रों की होड़ और अन्य राष्ट्रीय सुरक्षा प्राथमिकताएँ महिलाओं के अधीनीकरण के महत्त्वपूर्ण कारक हैं। राजनीति और अन्य संस्थागत क्षेत्रों में महिलाओं के बढ़ते हुए प्रवेश और सफलता से यह स्पष्ट होता है कि प्राधिकार-भूमिका के लिए स्वीकार्य रणनीति के रूप में महिलाओं द्वारा पुरुषोचित मूल्य अपनाने में बढ़ोतरी हुई है। महिलाओं के लिए नए क्षेत्रों में एक क्षेत्र व्यावसायिक सैन्य सेवा खुला है। विशेष रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में महिलाएं अप्रत्याशित संख्या में सशस्त्र सेनाओं में प्रवेश कर रही हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रमुख नारीवादी संगठनों ने समान अवसरों पर महिलाओं के लिए पात्रता का समर्थन किया है।

शांति और नारीवाद के साझे उद्देश्य–हिंसा और वंचन (Deprivation) के प्रति संवेदनशीलता एवं शांति का महत्त्व जानने के लिए, पुरुषों की बजाय महिलाओं पर विशेष अध्ययन की आवश्यकता है। उन्होंने मानव सभ्यता के संपूर्ण इतिहास में पालन-पोषण करने वाली माता और स्वाभाविक शांति निर्मात्री की भूमिका निर्वाह किया है। सार्वजनिक और व्यक्तिगत दोनों क्षेत्रों में हिंसा का उन्मूलन शांति प्राप्ति के लिए जरूरी है। महिलाओं द्वारा हिंसा से मुक्ति का लक्ष्य युद्ध के विरुद्ध निरस्त्रीकरण और शांति अभियानों द्वारा बढ़ाया जा सकता है। शांति की नारीवादी संकल्पना का विस्तार सामाजिक

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

न्याय, आर्थिक समता और पारिस्थितिकीय संतुलन जैसी परिस्थितियों से किया जा सकता है। पुरुषों और महिलाओं के मध्य समानता के संबंध, समस्त लोगों के मध्य समानता के लिए और प्रजातीय तथा पारिस्थितिकीय विनाश की समाप्ति के लिए नींव के रूप में काम कर सकते हैं।

सुरक्षा की पुनः अवधारणा–राष्ट्रीय सुरक्षा उन आवेगों को प्रदर्शित करती है, जिनसे राज्य द्वारा नियंत्रित संगठित हिंसा के सैन्य प्रभुत्व का ढाँचा विकसित होता है। परमाणु अस्त्रों के विकास का इतिहास इस बात का गवाह है कि शक्ति का प्रयोग करने वाले कुछ व्यक्तियों का प्रभुत्व ज्यादा व्यक्तियों पर होता है। परमाणु बम परियोजना पुरुषोचित शक्ति और विनाश की पूर्ण विकसित छवि है। राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर सरकार द्वारा सार्वजनिक जानकारी के बिना अस्त्रों का विनिर्माण और गलत प्रयोग जन-आबादी पर परमाणु अस्त्रों के परीक्षण से स्पष्ट होता है।

राजनीतिक अर्थव्यवस्था उपागम

राजनीतिक अर्थव्यवस्था उपागम अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की राजनीतिक और आर्थिक संरचनाओं पर ध्यान केन्द्रित करता है, जो राज्यों के मध्य और उनके अंदर धन-संपत्ति के असमान वितरण की स्थितियां पैदा करते हैं। राजनीतिक अर्थव्यवस्था उपागम वर्तमान राजनीतिक अर्थव्यवस्था और सामाजिक तथा अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष के लिए उसके प्रभावों का मूल्यांकन करता है।

आर्थिक असमानता–संसार आय के अंतर द्वारा अमीर और गरीब वर्ग में बँटा है। 1960 और 1991 के बीच विश्व आबादी के 20 प्रतिशत सबसे ज्यादा धनिकों की आय का भाग 70 प्रतिशत से बढ़कर 85 प्रतिशत हो गया था। अमीर औद्योगिक देशों में विश्व की आबादी के एक-चौथाई से भी कम लोग रहते हैं, लेकिन वे संसार में उत्पादित सामग्री का तीन-चौथाई से भी ज्यादा का उपयोग करते हैं। फिर भी, संसार के बहुत से लोगों की भोजन और अन्य मूलभूत आर्थिक जरूरतें पूरी नहीं हो पाती हैं। पोषण से वंचित और पीड़ित लोगों की संख्या निरंतर बढ़ रही है।

मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था और वर्ग संबंध–यदि वंचित लोगों के लिए अवसर बढ़ाने हैं तो समान भूमंडलीय आर्थिक प्रणाली जरूरी है। परंपरागत आर्थिक उदारवाद में, सार्वभौमिक नियम है कि सभी के लिए समुचित सम्पत्ति एवं सुख व्यक्तिवाद और सम्पत्ति अर्जन द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। सरकार की भूमिका मुक्त बाजार समाज को बढ़ावा देने के लिए निजी सम्पत्ति के अधिकारों की रक्षा करने के लिए राजनीतिक वातावरण पैदा करने की होती है। मार्क्सवादी व्याख्या में मुक्त बाजार क्रियाविधि पर आधारित पूँजीवादी अर्थव्यवस्था संगठित करने का तरीका नहीं है, लेकिन इसमें दुर्बल वर्ग अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने के लिए राज्य, संस्कृति और धार्मिक संस्थाओं का नियंत्रण करता है। मार्क्सवाद प्रतिद्वंद्वी वर्गों के मध्य संबंधों के आधार पर सामाजिक संरचना का मूल्यांकन करता है। इनमें से एक श्रमजीवी सर्वहारा वर्ग है, जिसमें कामगार अपने शारीरिक श्रम से मजदूरी कमाते हैं और दूसरा पूँजीपति वर्ग है, जिसका पूँजी पर एकाधिकार है।

अंतर्राष्ट्रीय पूँजीवाद और युद्ध–19वीं शताब्दी के उदारवादी ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन हाब्स ने निष्कर्ष निकाला कि घरेलू आर्थिक गतिविधियों की संतृप्ति, पूँजीवाद की रक्षा में विस्तारवादी नीतियों के लिए मार्ग प्रदान करती है। अनियंत्रित पूँजीवादी उत्पादन से होने वाले अधिशेष माल के लिए बाजार तलाशने की जरूरत तथा बढ़ी हुई उत्पादकता की प्रतियोगिता करने की जरूरत का परिणाम साम्राज्यवाद है। मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारक साम्राज्यवाद को पूँजीवादी राज्यों की आर्थिक संरचना का कारण मानते हैं। लेनिन के अनुसार बाहरी बाजार अधिशेष माल और वित्तीय निवेशों के लिए पूँजीवाद की उत्तरजीविता के लिए जरूरी है। इस प्रकार साम्राज्यवाद विश्वव्यापी मात्रा में पूँजीवाद के विस्तार का अपरिहार्य परिणाम है। अंतर्राष्ट्रीय पूँजीवाद से कुछ ही व्यक्तियों के हाथों में धन के संकेन्द्रण ने उन्हें विश्वव्यापी स्तर का बनाया है और इसके परिणामस्वरूप अंतर्राष्ट्रीय असमानताएं पैदा हुई हैं।

आर्थिक एकीकरण और भूमंडलीकरण (वैश्वीकरण)–विगत दो दशकों से विश्व के देशों की प्रमुख विशेषताओं में से एक है, वैश्विक आर्थिक एकीकरण की ओर झुकाव। पूँजीवाद का अंतर्राष्ट्रीयकरण, नए राजनीतिक गठबंधनों की रचना, सामाजिक मूल्यों का रूपांतरण और वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी की प्रगति में तीव्रता आदि ने इस प्रक्रिया को सरल बनाया है। आर्थिक वैश्वीकरण अनियमित विश्वस्तरीय अर्थव्यवस्था की गतिशीलता के अनुकूल राष्ट्रीय नीतियां समायोजित करने में राज्यों की भूमिका को कम करता है। औद्योगिक राज्यों ने संविदाएं लागू करके संसार भर में बाजार नियम लागू कर राजनीतिक शक्ति के साधन द्वारा निजी उद्यमों का समर्थन किया है। दूसरी ओर समाज के प्रमुख तत्त्वों में कई सार्वजनिक आर्थिक कार्यों का निजीकरण उपेक्षित किया गया है। वैश्वीकरण ने शक्तिशाली और वंचित दोनों आर्थिक क्षेत्रों को विकसित किया है। प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में मूल्य आधारित उत्पादकों की अनेक किस्मों का उत्पादन करने की क्षमता दक्षता-प्राप्त मूल कार्यबल ने उत्तम वेतन के साथ-साथ रोजगार भी निर्धारित किए हैं।

सामाजिक संक्रमण–वर्तमान में संसार में कई गरीब देश पूर्व यूरोपीय उपनिवेश हैं और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था की महत्त्वपूर्ण संरचना से शोषण और असंतोष के अनुभव के भागीदार रहे हैं। परम्परागत जीवन के क्षेत्र में बाजारों के विस्तार ने उन

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com